

सूरह जुहा^[1] - 93

سُورَةُ الضُّحَى

सूरह जुहा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस के आरंभ में “जुहा” (दिन के उजाले) की शपथ ग्रहण करने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 से 2 तक में दिन और रात की गवाही प्रस्तुत कर के इस की ओर संकेत किया गया है कि इस संसार में अल्लाह ने जैसे उजाला और अंधेरा दोनों बनाये हैं इसी प्रकार परीक्षा के लिये दुःख और सुख भी बनाये हैं।
- आयत 3 में बताया गया है कि सत्य की राह में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिस दुःख का सामना कर रहे हैं उस से यह नहीं समझना चाहिये कि अल्लाह ने आप से खिन्न हो कर आप को छोड़ दिया है।
- आयत 4,5 में आप को सफलताओं की शुभसूचना दी गई है।
- आयत 6 से 8 तक में उन दुःखों की चर्चा की गई है जिन से आप नबी होने से पहले जूझ रहे थे तो अल्लाह के उपकारों से आप की राहें खुलीं।

1 यह सूरह आरंभिक युग की है। भाष्य कारों ने लिखा है कि कुछ दिन के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रकाशना (वह्नी) का उतरना रुक गया। जिस पर आप अति दुःखित और चिन्तित हो गये कि कहीं मुझ से कोई दोष तो नहीं हो गया? इस पर आप को सांत्वना देने के लिये यह सूरह अवतीर्ण हुई। इस में सर्व प्रथम प्रकाशित दिन तथा रात्री की शपथ ले कर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विश्वास दिलाया गया है कि आप के पालनहार ने न तो आप को छोड़ा है और न ही आप से अप्रसन्न हुआ है। इसी के साथ आप को यह शुभ सूचना भी दी गई है कि आगामी समय आप के लिये प्रथम समय से उत्तम होगा। यह भविष्य वाणी उस समय की गई जब इस के दूर दूर तक कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहे थे। सम्पूर्ण मक्का आप का विरोधी हो गया था। और अल्लाह के सिवा आप का कोई सहायक नहीं था। परन्तु मात्र इक्कीस वर्षों में पूरा मक्का इस्लाम का अनुयायी बन गया। और फिर पूरे अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वजा लहराने लगा। और कुर्आन की यह भविष्यवाणी शत प्रतिशत पूरी हुई जो कुर्आन के अल्लाह का वचन होने का पमाण बन गई।

- आयत 9 से 11 तक में यह बताया गया है कि इन उपकारों के कारण आप का व्यवहार निर्बलों तथा अनाथों की सहायता एवं अल्लाह के उपकारों का स्वीकार तथा प्रदर्शन होना चाहिये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- | | |
|---|--|
| 1. शपथ है दिन चढ़े की! | وَالضُّحَىٰ |
| 2. और शपथ है रात्री की जब उस का
सन्नाटा छा जाये! | وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ |
| 3. (हे नबी) तेरे पालनहार ने तुझे न तो
छोड़ा और न ही विमुख हुआ। | مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ |
| 4. और निश्चय ही आगामी युग तेरे
लिये प्रथम युग से उत्तम है। | وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ |
| 5. और तेरा पालनहार तुम्हें इतना देगा
कि तू प्रसन्न हो जायेगा। | وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ |
| 6. क्या उस ने तुम्हे अनाथ पा कर
शरण नहीं दी? | أَلَمْ يَجْعَلْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ |
| 7. और तुझे पथ भूला हुआ पाया तो
सीधा मार्ग नहीं दिखाया? | وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ |
| 8. और निर्धन पाया तो धनी नहीं कर
दिया? | وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ |
| 9. तो तुम अनाथ पर क्रोध न करना ^[1] | فَإِنَّا الْيَتِيمَ فَلْأَتَقَرَّ |

1 (1-9) इन आयतों में अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फरमाया है कि: तुम्हें यह चिन्ता कैसे हो गई कि हम अप्रसन्न हो गये? हम ने तो तुम्हारे जन्म के दिन से निरन्तर तुम पर उपकार किये हैं। तुम अनाथ थे तो तुम्हारे पालन और रक्षा की व्यवस्था की। राह से अंजान थे तो राह दिखाई। निर्धन थे तो धनी बना दिया। यह बातें बता रही हैं कि तुम आरम्भ ही से हमारे प्रियवर हो और तुम पर हमारा उपकार निरन्तर है।

10. और माँगने वाले को न झिड़कना।
 11. और अपने पालनहार के उपकार का वर्णन करना।^[1]

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْفَرْ ۝
 وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

1 (10-11) इन अन्तिम आयतों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया गया है कि: हम ने तुम पर जो उपकार किये हैं उन के बदले में तुम अल्लाह की उत्पत्ति के साथ दया और उपकार करो यही हमारे उपकारों की कृतज्ञता होगी।